

Para 24

Sipara 24 of 30 · 175 Ayahs · Translation: Hindi

Az-Zumar

32

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللَّهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ إِذْ جَاءَهُ؟ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مِثْلُ ۚ ۚ لِّلْكَافِرِينَ

तो इससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो खुदा पर झूठ (तूफान) बाँधे और जब उसके पास सच्ची बात आए तो उसको झुठला दे क्या जहन्नूम में काफिरों का ठिकाना नहीं है

33

وَالَّذِي جَاءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ ۚ ۚ أُو۟لَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ

(ज़रूर है) और याद रखो कि जो शख्स (रसूल) सच्ची बात लेकर आया वह और जिसने उसकी तसदीक की यही लोग तो परहेज़गार हैं

34

لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ ۚ ذَلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ

ये लोग जो चाहेंगे उनके लिए परवर दिगार के पास (मौजूद) है, ये नेकी करने वालों की जज़ाए खैर है

35

لِيُكَفِّرَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا ۚ ۚ وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُم بِأَحْسَنِ الَّذِي كَانُوا ۚ ۚ يَعْمَلُونَ

ताकि खुदा उन लोगों की बुराइयों को जो उन्होंने की हैं दूर कर दे और उनके अच्छे कामों के एवज़ जो वह कर चुके थे उसका अज़्र (सवाब) अता फरमाए

36

أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ؟ ۚ ۚ وَيُخَوِّفُونَكَ بِالَّذِينَ مِنْ دُونِهِ؟ ۚ ۚ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ؟

क्या खुदा अपने बन्दों (की मदद) के लिए काफ़ी नहीं है (ज़रूर है) और (ऐ रसूल) तुमको लोग खुदा के सिवा (दूसरे माबूदों) से डराते हैं और खुदा जिसे गुमराही में छोड़ दे तो उसका कोई राह पर लाने वाला नहीं है

وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَمَا لَهُ؟ [1] مِنْ مُضِلٍّ [2] أَلَيْسَ اللَّهُ بِعَزِيزٍ [3] ذِي أَنْتِقَامٍ [4]؟

और जिस शख्स की हिदायत करे तो उसका कोई गुमराह करने वाला नहीं। क्या ख़ुदा ज़बरदस्त और बदला लेने वाला नहीं है (ज़रूर है)

وَلَيْنَ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ [1] قُلْ أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَدْعُونَ
مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ أَرَادَنِيَ اللَّهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كَاشِفَتُ ضُرَّهُ [2] أَوْ أَرَادَنِي بِرَحْمَةٍ هَلْ
هُنَّ مُمْسِكَةٌ رَحْمَتَهُ [3] [4] قُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ [5] عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ

और (ऐ रसूल) अगर तुम इनसे पूछो कि सारे आसमान व ज़मीन को किसने पैदा किया तो ये लोग यकीनन कहेंगे कि ख़ुदा ने, तुम कह दो कि तो क्या तुमने ग़ौर किया है कि ख़ुदा को छोड़ कर जिन लोगों की तुम इबादत करते हो अगर ख़ुदा मुझे कोई तकलीफ़ पहुँचाना चाहे तो क्या वह लोग उसके नुक़सान को (मुझसे) रोक सकते हैं या अगर ख़ुदा मुझ पर मेहरबानी करना चाहे तो क्या वह लोग उसकी मेहरबानी रोक सकते हैं (ऐ रसूल) तुम कहो कि ख़ुदा मेरे लिए काफ़ी है उसी पर भरोसा करने वाले भरोसा करते हैं

قُلْ يُقَوْمُ أَعْمَلُوا [1] عَلَى مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَمِلْتُ [2] [3] فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ऐ मेरी क़ौम तुम अपनी जगह (जो चाहो) अमल किए जाओ मैं

مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ [1] يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ [2] مُقِيمٌ

भी (अपनी जगह) कुछ कर रहा हूँ, फिर अनक़रीब ही तुम्हें मालूम हो जाएगा कि किस पर वह आफ़त आती है जो उसको (दुनिया में) रूसवा कर देगी और (आख़िर में) उस पर दायमी अज़ाब भी नाज़िल होगा

إِنَّا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ [1] فَمَنْ أَهْتَدَىٰ فَلِنَفْسِهِ [2] [3] وَمَنْ ضَلَّٰ فَإِنَّمَا
يُضِلُّ عَلَيْهِ [4] وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ

(ऐ रसूल) हमने तुम्हारे पास (ये) किताब (क़ुरान) सच्चाई के साथ लोगों (की हिदायत) के वास्ते नाज़िल की है, पस जो राह पर आया तो अपने ही (भले के) लिए और जो गुमराह हुआ तो उसकी गुमराही का वबाल भी उसी पर है और फिर तुम कुछ उनके ज़िम्मेदार तो हो नहीं

اللَّهُ يَتَوَفَّى الْأَنْفُسَ حِينَ مَوْتِهَا وَالَّتِي لَمْ تَمُتْ فِي مَنَامِهَا ۖ فَيُمْسِكُ الَّتِي قَضَىٰ عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْأُخْرَىٰ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ

खुदा ही लोगों के मरने के वक्त उनकी रूहें (अपनी तरफ़) खींच बुलाता है और जो लोग नहीं मरे (उनकी रूहें) उनकी नींद में (खींच ली जाती हैं) बस जिन के बारे में खुदा मौत का हुक्म दे चुका है उनकी रूहों को रोक रखता है और बाक़ी (सोने वालों की रूहों) को फिर एक मुक़रर वक्त तक के वास्ते भेज देता है जो लोग (ग़ौर) और फ़िक्र करते हैं उनके लिए (कुदरते खुदा की) यक़ीनी बहुत सी निशानियाँ हैं

أَمْ اتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ شُفَعَاءَ ۚ قُلْ أُولَٰئِكَ كَانُوا لَآ يَمْلِكُونَ شَيْئًا ۖ وَلَا يَعْقِلُونَ

क्या उन लोगों ने खुदा के सिवा (दूसरे) सिफारिशी बना रखे हैं (ऐ रसूल) तुम कह दो कि अगरचे वह लोग न कुछ एख़तेयार रखते हों न कुछ समझते हों

قُلْ لِلَّهِ الشَّفَعَةُ جَمِيعًا ۚ لَهُ ۖ مَلِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۖ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ

(तो भी सिफारिशी बनाओगे) तुम कह दो कि सारी सिफारिश तो खुदा के लिए खास है- सारे आसमान व ज़मीन की हुक्मत उसी के लिए खास है, फिर तुम लोगों को उसकी तरफ लौट कर जाना है

وَإِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوبُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآٰءِخِرَةِ ۚ وَإِذَا ذُكِرَ الَّذِينَ مِن دُونِهِ ۖ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ

और जब सिर्फ अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो जो लोग आख़ेरत पर ईमान नहीं रखते उनके दिल मुतनफ़ि़र हो जाते हैं और जब खुदा के सिवा और (माबूदों) का ज़िक्र किया जाता है तो बस फौरन उनकी बाछें खिल जाती हैं

قُلِ اللَّهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۖ عَلِمِ الْغَيْبِ ۖ أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِي مَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ऐ खुदा (ऐ) सारे आसमान और ज़मीन पैदा करने वाले, ज़ाहिर व बातिन के जानने वाले हक़ बातों में तेरे बन्दे आपस में झगड़ रहे हैं तू ही उनके दरमियान फैसला कर देगा

وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ۖ وَمِثْلَهُ ۖ مَعَهُ ۖ لَافْتَدَوْا ۖ بِهِ ۖ مِنْ سُوءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۖ وَبَدَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مَا لَمْ يَكُونُوا ۖ يَحْتَسِبُونَ

और अगर नाफरमानों के पास रूप ज़मीन की सारी काएनात मिल जाएग बल्कि उनके साथ उतनी ही और भी हो तो क़यामत के दिन ये लोग यक़ीनन सख्त अज़ाब का फ़िदया दे निकलें (और अपना छुटकारा कराना चाहें) और (उस वक़्त) उनके सामने खुदा की तरफ़ से वह बात पेश आएगी जिसका उन्हें वहम व गुमान भी न था

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا ۖ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا ۖ بِهِ ۖ يَسْتَهْزِءُونَ

और जो बदकिरदारियाँ उन लोगों ने की थीं (वह सब) उनके सामने खुल जाएँगी और जिस (अज़ाब) पर यह लोग कहकहे लगाते थे वह उन्हें घेरेगा

فَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ ۖ دَعَانَا ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ نِعْمَةً ۖ مِنَّا قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ ۖ عَلَىٰ عِلْمٍ ۖ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ ۖ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ

इन्सान को तो जब कोई बुराई छू गयी बस वह लगा हमसे दुआएँ माँगने, फिर जब हम उसे अपनी तरफ़ से कोई नेअमत अता करते हैं तो कहने लगता है कि ये तो सिर्फ़ (मेरे) इल्म के ज़ोर से मुझे दिया गया है (ये ग़लती है) बल्कि ये तो एक आजमाइश है मगर उन में के अक्सर नहीं जानते हैं

قَدْ قَالُوا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا ۖ يَكْسِبُونَ

जो लोग उनसे पहले थे वह भी ऐसी बातें बका करते थे फिर (जब हमारा अज़ाब आया) तो उनकी कारस्तानियाँ उनके कुछ भी काम न आई

فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا ۖ وَالَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ مِنْ هَؤُلَاءِ سَيُصِيبُهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا ۖ وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ

गरज़ उनके आमाल के बुरे नतीजे उन्हें भुगतने पड़े और उन (कुफ़ारे मक्का) में से जिन लोगों ने नाफरमानियाँ की हैं उन्हें भी अपने अपने आमाल की सज़ाएँ भुगतनी पड़ेंगी और ये लोग (खुदा को) े आजिज़ नहीं कर सकते

أَوَلَمْ يَعْلَمُوا ۚ أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَءَايَاتٍ ۚ
لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ

क्या उन लोगों को इतनी बात भी मालूम नहीं कि खुदा ही जिसके लिए चाहता है रोज़ी फराख करता है और (जिसके लिए चाहता है) तंग करता है इसमें शक नहीं कि क्या इसमें ईमानदार लोगों के (कुदरत की) बहुत सी निशानियाँ हैं

ۚ قُلْ يُعْبَادِيَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا ۚ عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا ۚ مِن رَّحْمَةِ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ
يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُ ۚ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ऐ मेरे (ईमानदार) बन्दों जिन्होने (गुनाह करके) अपनी जानों पर ज्यादातियाँ की हैं तुम लोग खुदा की रहमत से नाउम्मीद न होना बेशक खुदा (तुम्हारे) कुल गुनाहों को बख्श देगा वह बेशक बड़ा बख्शने वाला मेहरबान है

وَأَنبِئُوا ۚ إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَأَسْلِمُوا ۚ لَهُ ۚ مِن قَبْلِ أَن يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنصِرُونَ

और अपने परवरदिगार की तरफ रूजू करो और उसी के फरमाबरदार बन जाओ (मगर) उस वक्त के क़बल ही कि तुम पर जब अज़ाब आ नाज़िल हो (और) फिर तुम्हारी मदद न की जा सके

وَاتَّبِعُوا ۚ أَحْسَنَ مَا أُنزِلَ إِلَيْكُم مِّن رَّبِّكُمْ مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً ۚ وَأَنْتُمْ
لَا تَشْعُرُونَ

और जो जो अच्छी बातें तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम पर नाज़िल हुई हैं उन पर चलो (मगर) उसके क़बल कि तुम पर एक बारगी अज़ाब नाज़िल हो और तुमको उसकी ख़बर भी न हो

أَن تَقُولَ نَفْسٌ ۚ يُحَسِّرَتِي عَلَىٰ مَا فَرَّطْتُ فِي جَنَابِ اللَّهِ وَإِن كُنْتُ لَمِنَ
السَّخِرِينَ

(कहीं ऐसा न हो कि) (तुममें से) कोई शख्स कहने लगे कि हाए अफ़सोस मेरी इस कोताही पर जो मैंने खुदा (की बारगाह) का तक्ररुब हासिल करने में की और मैं तो बस उन बातों पर हँसता ही रहा

57

أَوْ تَقُولَ لَوْ أَنَّ اللَّهَ هَدَانِي لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِينَ

या ये कहने लगे कि अगर खुदा मेरी हिदायत करता तो मैं ज़रूर परहेज़गारों में से होता

58

أَوْ تَقُولَ حِينَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ أَنَّ لِي كَرَّةً ۖ فَأَكُونَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ

या जब अज़ाब को (आते) देखें तो कहने लगे कि काश मुझे (दुनिया में) फिर दोबारा जाना मिले तो मैं नेकी कारों में हो जाऊँ

59

بَلَىٰ قَدْ جَاءَتْكَ ءَايَاتِي فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكُفَرِينَ

उस वक्त खुदा कहेगा (हाँ) हाँ तेरे पास मेरी आयतें पहुँची तो तूने उन्हें झुठलाया और शेखी कर बैठा और तू भी काफ़िरों में से था (अब तेरी एक न सुनी जाएगी)

60

وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ تَرَى الَّذِينَ كَذَبُوا ۖ عَلَى اللَّهِ وُجُوهُهُم مُّسْوَدَّةٌ ۖ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوً ۖ لِّلْمُتَكَبِّرِينَ

और जिन लोगों ने खुदा पर झूठे बोहतान बाँधे - तुम क़यामत के दिन देखोगे उनके चेहरे सियाह होंगे क्या गुरूर करने वालों का ठिकाना जहन्नूम में नहीं है (ज़रूर है)

61

وَيُنَجِّي اللَّهُ الَّذِينَ اتَّقَوْا ۖ بِمَفَازَتِهِمْ لَا يَمَسُّهُمْ السُّوءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ

और जो लोग परहेज़गार हैं खुदा उन्हें उनकी कामयाबी (और सआदत) के सबब निजात देगा कि उन्हें तकलीफ छुएगी भी नहीं और न यह लोग (किसी तरह) रंजीदा दिल होंगे

62

اللَّهُ خَلِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ۖ

खुदा ही हर चीज़ का जानने वाला है और वही हर चीज़ का निगेहबान है

63

لَهُ ۖ مَقَالِيدُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا ۖ بِآيَاتِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَسِرُونَ

सारे आसमान व ज़मीन की कुन्जियाँ उसके पास है और जो लोग उसकी आयतों से इन्कार कर बैठें वही घाटे में रहेंगे

قُلْ أَفَغَيْرَ اللَّهِ تَأْمُرُونَنِي أَعْبُدُ أَيُّهَا الْجَاهِلُونَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि नादानों भला तुम मुझसे ये कहते हो कि मैं खुदा के सिवा किसी दूसरे की इबादत करूँ

وَلَقَدْ أُوحِيَ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخُسْرَيْنِ

और (ऐ रसूल) तुम्हारी तरफ और उन (पैगम्बरों) की तरफ जो तुमसे पहले हो चुके हैं यकीनन ये वही भेजी जा की है कि अगर (कहीं) शिर्क किया तो यकीनन तुम्हारे सारे अमल अकारत हो जाएँगे और तुम तो ज़रूर घाटे में आ जाओगे

بَلِ اللَّهُ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِنَ الشَّاكِرِينَ

बल्कि तुम खुदा ही कि इबादत करो और शुक्र गुज़ारों में हो

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ ۚ وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَالسَّمُوتُ مَطْوِيَّتٌ ۚ بِيَمِينِهِ ۚ سُبْحَنَهُ ۚ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ

और उन लोगों ने खुदा की जैसी कद्र दानी करनी चाहिए थी उसकी (कुछ भी) कद्र न की हालाँकि (वह ऐसा कादिर है कि) कयामत के दिन सारी ज़मीन (गोया) उसकी मुट्ठी में होगी और सारे आसमान (गोया) उसके दाहिने हाथ में लिपटे हुए हैं जिसे ये लोग उसका शरीक बनाते हैं वह उससे पाकीज़ा और बरतर है

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمُوتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَاءَ اللَّهُ ۚ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخْرَىٰ فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ

और जब (पहली बार) सूर फूँका जाएगा तो जो लोग आसमानों में हैं और जो लोग ज़मीन में हैं (मौत से) बेहोश होकर गिर पड़ेंगे) मगर (हाँ) जिस को खुदा चाहे वह अलबत्ता बच जाएगा) फिर जब दोबारा सूर फूँका जाएगा तो फौरन सब के सब खड़े हो कर देखने लगेंगे

وَأَشْرَقَتِ الْأَرْضُ بِنُورِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتَابُ وَجَاءَ عِبَادُ الرَّسُولِ وَالشُّهَدَاءُ وَقُضِيَ
بَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ

और ज़मीन अपने परवरदिगार के नूर से जगमगा उठेगी और (आमाल की) किताब (लोगों के सामने) रख दी जाएगी और पैगम्बर और गवाह ला हाज़िर किए जाएँगे और उनमें इन्साफ के साथ फैसला कर दिया जाएगा और उन पर (ज़रा बराबर) ज़ुल्म नहीं किया जाएगा

وُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُونَ

और जिस शख्स ने जैसा किया हो उसे उसका पूरा पूरा बदला मिल जाएगा, और जो कुछ ये लोग करते हैं वह उससे खूब वाकिफ है

وَسِيقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ زُمَرًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا فَتَحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ
خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ ۖ مِّنكُمْ يَتْلُونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِ رَبِّكُمْ وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ
هَذَا ۖ قَالُوا ۚ بَلَىٰ وَلَكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكَافِرِينَ

और जो लोग काफिर थे उनके गोल के गोल जहन्नुम की तरफ हँकाए जाएँगे और यहाँ तक की जब जहन्नुम के पास पहुँचेंगे तो उसके दरवाज़े खोल दिए जाएँगे और उसके दरवाज़ा उनसे पूछेंगे कि क्या तुम लोगों में के पैगम्बर तुम्हारे पास नहीं आए थे जो तुमको तुम्हारे परवरदिगार की आयतें पढ़कर सुनाते और तुमको इस रोज़ (बद) के पेश आने से डराते वह लोग जवाब देंगे कि हाँ (आए तो थे) मगर (हमने न माना) और अज़ाब का हुक्म काफिरों के बारे में पूरा हो कर रहेगा

قِيلَ ادْخُلُوا ۖ أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ فَبِئْسَ مَثْوًى الْمُتَكَبِّرِينَ

(तब उनसे) कहा जाएगा कि जहन्नुम के दरवाज़ों में धँसो और हमेशा इसी में रहो गरज़ तकब्बुर करने वाले का (भी) क्या बुरा ठिकाना है

وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا^۱ رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا^۲ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا
وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلِّمْ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَالِدِينَ

और जो लोग अपने परवरदिगार से डरते थे वह गिर्दों गिर्दा (गिरोह गिरोह) बेहिश्त की तरफ़ (एजाज़ व इकराम से) बुलाए जाएंगे यहाँ तक कि जब उसके पास पहुँचेंगे और बेहिश्त के दरवाज़े खोल दिये जाएँगे और उसके निगेहबान उन से कहेंगे सलाम अलैकुम तुम अच्छे रहे, तुम बेहिश्त में हमेशा के लिए दाखिल हो जाओ

وَقَالُوا^۱ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي صَدَقَنَا وَعْدَهُ^۲ وَأَوْرَثَنَا الْأَرْضَ نَتَّبِعُكَ مِنْ الْجَنَّةِ حَيْثُ
نَشَاءُ^۳ فَنِعْمَ أَجْرُ الْعَمَلِينَ

और ये लोग कहेंगे खुदा का शुक्र जिसने अपना वायदा हमसे सच्चा कर दिखाया और हमें (बेहिश्त की) सरज़मीन का मालिक बनाया कि हम बेहिश्त में जहाँ चाहें रहें तो नेक चलन वालों की भी क्या खूब (खरी) मज़दूरी है

وَتَرَى الْمَلَائِكَةَ حَافِّينَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ^۱ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ
بِالْحَقِّ وَقِيلَ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

और (उस दिन) फरिश्तों को देखोगे कि अर्श के गिर्दा गिर्द घेरे हुए डटे होंगे और अपने परवरदिगार की तारीफ़ की (तसबीह) कर रहे होंगे और लोगों के दरमियान ठीक फैसला कर दिया जाएगा और (हर तरफ से यही) सदा बुलन्द होगी अल्हमदो लिल्लाहे रब्बिल आलेमीन

Ghafir

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

हा मीम

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ

(इस) किताब (कुरान) का नाज़िल करना (खास बारगाहे) खुदा से है जो (सबसे) ग़ालिब बड़ा वाक्फ़िकार है

3

غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيدِ الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ ۝ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۝ إِلَيْهِ الْمَصِيرُ

गुनाहों का बख्शने वाला और तौबा का कुबूल करने वाला सख्त अज़ाब देने वाला साहिबे फज़ल व करम है उसके सिवा कोई माबूद नहीं उसी की तरफ (सबको) लौट कर जाना है

4

مَا يُجَدِلُ فِي آيَاتِ اللَّهِ إِلَّا الَّذِينَ كَفَرُوا ۝ فَلَا يَغْرُرُكَ تَقَلُّبُهُمْ فِي الْبَلَدِ

खुदा की आयतों में बस वही लोग झगड़े पैदा करते हैं जो काफिर हैं तो (ऐ रसूल) उन लोगों का शहरों (शहरों) घूमना फिरना और माल हासिल करना

5

كَذَبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ ۝ وَالْأَحْزَابُ مِنْ ۝ بَعْدِهِمْ ۝ وَهَمَّتْ كُلُّ أُمَّةٍ بِرَسُولِهِمْ لِيَأْخُذُوهُ ۝ وَجَدُلُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ فَأَخَذْتُهُمْ ۝ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ

तुम्हें इस धोखे में न डाले (कि उन पर अज़ाब न होगा) इन के पहले नूह की क़ौम ने और उन के बाद और उम्मतों ने (अपने पैगम्बरों को) झुठलाया और हर उम्मत ने अपने पैगम्बरों के बारे में यही ठान लिया कि उन्हें गिरफ्तार कर (के क़त्ल कर डालें) और बेहूदा बातों की आड़ पकड़ कर लड़ने लगें - ताकि उसके ज़रिए से हक़ बात को उखाड़ फेंकें तो मैंने, उन्हें गिरफ्तार कर लिया फिर देखा कि उन पर (मेरा अज़ाब कैसा (सख्त हुआ)

6

وَكَذَلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا ۝ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ النَّارِ

और इसी तरह तुम्हारे परवरदिगार का अज़ाब का हुक्म (उन) काफ़िरों पर पूरा हो चुका है कि यह लोग यक़ीनी जहन्नुमी हैं

7

الَّذِينَ يَحْمِلُونَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهُ ۝ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُونَ بِهِ ۝ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِلَّذِينَ ءَامَنُوا ۝ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً ۝ وَعِلْمًا ۝ فَاغْفِرْ لِلَّذِينَ تَابُوا ۝ وَاتَّبَعُوا سَبِيلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ

जो (फ़रिश्ते) अर्श को उठाए हुए हैं और जो उस के गिर्दा गिर्द (तैनात) हैं (सब) अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ तसबीह करते हैं और उस पर ईमान रखते हैं और मोमिनों के लिए बख़्शिश की दुआएं माँगा करते हैं कि परवरदिगार तेरी रहमत और तेरा इल्म हर चीज़ पर अहाता किए हुए हैं, तो जिन लोगों ने (सच्चे) दिल से तौबा कर ली और तेरे रास्ते पर चले उनको बख्श दे और उनको जहन्नुम के अज़ाब से बचा ले

8

رَبَّنَا وَأَدْخِلْهُمْ جَنَّتِ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدْتَهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ
وَزُرِّيَّتِهِمْ ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

ऐ हमारे पालने वाले इन को सदाबहार बागों में जिनका तूने उन से वायदा किया है दाखिल कर और उनके बाप दादाओं और उनकी बीवीयों और उनकी औलाद में से जो लोग नेक हो उनको (भी बख्श दे) बेशक तू ही ज़बरदस्त (और) हिक्मत वाला है

9

وَقِهِمُ السَّيِّئَاتِ ۚ وَمَنْ تَقِ السَّيِّئَاتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهُ ۚ وَذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ

और उनको हर किस्म की बुराइयों से महफूज़ रख और जिसको तूने उस दिन (कयामत) के अज़ाबों से बचा लिया उस पर तूने बड़ा रहम किया और यही तो बड़ी कामयाबी है

10

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ يُنَادُونَ لَمَقْتُ اللَّهِ أَكْبَرُ مِنْ مَقَّتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ إِذِ تُدْعَوْنَ إِلَى
الْإِيمَنِ فَتَكْفُرُونَ

(हाँ) जिन लोगों ने कुफ़्र एख्तेयार किया उनसे पुकार कर कह दिया जाएगा कि जितना तुम (आज) अपनी जान से बेज़ार हो उससे बढ़कर खुदा तुमसे बेज़ार था जब तुम ईमान की तरफ बुलाए जाते थे तो कुफ़्र करते थे

11

قَالُوا ۚ رَبَّنَا أَمَتْنَا اثْنَتَيْنِ وَأَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوبِنَا فَهَلْ إِلَى خُرُوجٍ ۚ مِنْ
سَبِيلٍ ۚ

वह लोग कहेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार तू हमको दो बार मार चुका और दो बार ज़िन्दा कर चुका तो अब हम अपने गुनाहों का एकरार करते हैं तो क्या (यहाँ से) निकलने की भी कोई सबील है

12

ذَلِكُمْ بِأَنَّهُ ۖ إِذَا دُعِيَ اللَّهُ وَحْدَهُ ۚ كَفَرْتُمْ ۚ وَإِنْ يُشْرَكَ بِهِ ۚ تَوَمَّنُوا ۚ ۚ فَالْحُكْمُ لِلَّهِ
الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ

ये इसलिए कि जब तन्हा खुदा पुकारा जाता था तो तुम ईन्कार करते थे और अगर उसके साथ शिर्क किया जाता था तो तुम मान लेते थे तो (आज) खुदा की हुक्मत है जो आलीशान (और) बुर्ज़ुग है

13

هُوَ الَّذِي يُرِيكُمْ ءَايَاتِهِ ۚ وَيُنَزِّلُ لَكُمْ مِنَ السَّمَاءِ رِزْقًا ۚ وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا مَنْ يُنِيبُ

वही तो है जो तुमको (अपनी क़ुदरत की) निशानियाँ दिखाता है और तुम्हारे लिए आसमान से रोज़ी नाज़िल करता है और नसीहत तो बस वही हासिल करता है जो (उसकी तरफ) रूज़ू करता है

14

فَادْعُوا ۚ اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ

पस तुम लोग खुदा की इबादत को ख़ालिस करके उसी को पुकारो अगरचे कुफ़ार बुरा मानें

15

رَفِيعُ الدَّرَجَاتِ ذُو الْعَرْشِ يُلْقِي الرُّوحَ مِنْ أَمْرِهِ ۚ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۚ لِيُنْذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ

खुदा तो बड़ा आली मरतबा अर्श का मालिक है, वह अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है अपने हुक्म से 'वही' नाज़िल करता है ताकि (लोगों को) मुलाकात (क़यामत) के दिन से डराएँ

16

يَوْمَ هُمْ بَرْزُونَ ۚ لَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ ۚ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ۚ لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ

जिस दिन वह लोग (क़ब्रों) से निकल पड़ेंगे (और) उनको कोई चीज़ खुदा से पोशीदा नहीं रहेगी (और निदा आएगी) आज किसकी बादशाहत है (फिर खुदा खुद कहेगा) ख़ास खुदा की जो अकेला (और) ग़ालिब है

17

الْيَوْمَ تُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ ۚ بِمَا كَسَبَتْ ۚ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ

आज हर शख्स को उसके किए का बदला दिया जाएगा, आज किसी पर कुछ भी ज़ुल्म न किया जाएगा बेशक खुदा बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है

18

وَأَنْذَرَهُمْ يَوْمَ الِأَازِفَةِ إِذِ الْقُلُوبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كُظْمِينَ ۚ مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ حَمِيمٍ ۚ وَلَا شَفِيعٍ ۚ يُطَاعُ

(ऐ रसूल) तुम उन लोगों को उस दिन से डराओ जो अनक़रीब आने वाला है जब लोगों के कलेजे घुट घुट के (मारे डर के) मुँह को आ जाएंगें (उस वक्त) न तो सरकशों का कोई सच्चा दोस्त होगा और न कोई ऐसा सिफारिशी जिसकी बात मान ली जाए

يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ

खुदा तो आँखों की दुजदीदा (खयानत की) निगाह को भी जानता है और उन बातों को भी जो (लोगों के) सीनों में पोशीदा है

وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ ۖ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ ۚ لَا يَقْضُونَ بِشَيْءٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ

और खुदा ठीक ठीक हुक्म देता है, और उसके सिवा जिनकी ये लोग इबादत करते हैं वह तो कुछ भी हुक्म नहीं दे सकते, इसमें शक नहीं कि खुदा सुनने वाला देखने वाला है

ۚ أَوَلَمْ يَسِيرُوا ۚ فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا ۚ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ كَانُوا ۚ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا ۚ هُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۚ وَءَاثَارٌ ۚ فِي الْأَرْضِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنَ اللَّهِ مِنْ وَّاقٍ ۚ

क्या उन लोगों ने रूए ज़मीन पर चल फिर कर नहीं देखा कि जो लोग उनसे पहले थे उनका अन्जाम क्या हुआ (हालाँकि) वह लोग कुवत (शान और उम्र सब) में और ज़मीन पर अपनी निशानियाँ (यादगारें इमारतें) वगैरह छोड़ जाने में भी उनसे कहीं बढ़ चढ़ के थे तो खुदा ने उनके गुनाहों की वजह से उनकी ले दे की, और खुदा (के गज़ब से) उनका कोई बचाने वाला भी न था

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَكَفَرُوا ۚ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ ۚ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ

ये इस सबब से कि उनके पैगम्बरान उनके पास वाज़ेए व रौशन मौजिज़े ले कर आए इस पर भी उन लोगों ने न माना तो खुदा ने उन्हें ले डाला इसमें तो शक ही नहीं कि वह क़वी (और) सख्त अज़ाब वाला है

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطٰنٍ ۚ مُّبِينٍ

और हमने मूसा को अपनी निशानियाँ और रौशन दलीलें देकर

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَمُّنَ وَقُرُونٍ فَقَالُوا ۚ سِحْرٌ ۚ كَذَّابٌ ۚ

फिरऔन और हामान और क़ारून के पास भेजा तो वह लोग कहने लगे कि (ये तो) एक बड़ा झूठा (और) जादूगर है

فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا ۖ أَأَقْتُلُوا ۚ أَبْنَاءَ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ مَعَهُ ۚ
وَأَسْتَحْيُوا ۚ نِسَاءَهُمْ ۚ وَمَا كَيْدُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۚ

गरज जब मूसा उन लोगों के पास हमारी तरफ से सच्चा दीन ले कर आये तो वह बोले कि जो लोग उनके साथ ईमान लाए हैं उनके बेटों को तो मार डालों और उनकी औरतों को (लौन्डिया बनाने के लिए) ज़िन्दा रहने दो और काफ़िरों की तद्दीरें तो बे ठिकाना होती हैं

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُونِي أَقْتُلْ مُوسَى وَلْيَدْعُ رَبَّهُ ۚ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُبَدِّلَ دِينَكُمْ أَوْ أَنْ يُظْهِرَ فِي الْأَرْضِ الْفَسَادَ

और फिरऔन कहने लगा मुझे छोड़ दो कि मैं मूसा को तो क़त्ल कर डालूँ, और (मैं देखूँ) अपने परवरदिगार को तो अपनी मदद के लिए बुलालें (भाईयों) मुझे अन्देशा है कि (मुबादा) तुम्हारे दीन को उलट पुलट कर डाले या मुल्क में फसाद पैदा कर दें

وَقَالَ مُوسَى إِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ مِنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ ۚ لَا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ

और मूसा ने कहा कि मैं तो हर मुताकब्बिर से जो हिसाब के दिन (क़यामत पर ईमान नहीं लाता) अपने और तुम्हारे परवरदिगार की पनाह ले चुका हूँ

وَقَالَ رَجُلٌ مُؤْمِنٌ ۖ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ إِيمَنَهُ ۚ أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَنْ يَقُولَ رَبِّيَ اللَّهُ ۚ وَقَدْ جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ مِنْ رَبِّكُمْ ۚ وَإِنْ يَكُ كَذِبًا ۖ فَعَلَيْهِ كَذِبُهُ ۚ وَإِنْ يَكُ صَادِقًا ۖ يُصِيبْكُمْ بِغَضِ الَّذِي يُعِدُّكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ ۚ كَذَابٌ ۚ

और फिरऔन के लोगों में एक ईमानदार शख्स (हिज़कील) ने जो अपने ईमान को छिपाए रहता था (लोगों से कहा) कि क्या तुम लोग ऐसे शख्स के क़त्ल के दरपै हो जो (सिर्फ) ये कहता है कि मेरा परवरदिगार अल्लाह है) हालाँकि वह तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम्हारे पास मौजिज़े लेकर आया और अगर (बिल गरज) ये शख्स झूठा है तो इसके झूठ का बवाल इसी पर पड़ेगा और अगर यह कहीं सच्चा हुआ तो जिस (अज़ाब की) तुम्हें ये धमकी देता है उसमें से कुछ तो तुम लोगों पर ज़रूर वाकेए होकर रहेगा बेशक खुदा उस शख्स की हिदायत नहीं करता जो हद से गुज़रने वाला (और) झूठा हो

يَقُومُ لَكُمْ الْمَلِكُ الْيَوْمَ ظُهْرِينَ فِي الْأَرْضِ فَمَنْ يَنْصُرُنَا مِنْ ۚ بِأَسِ اللَّهِ إِنْ
جَاءَنَا ۚ قَالَ فِرْعَوْنُ مَا أُرِيكُمْ إِلَّا مَا أَرَىٰ وَمَا أَهْدِيكُمْ إِلَّا سَبِيلَ الرَّشَادِ

ऐ मेरी क्रौम आज तो (बेशक) तुम्हारी बादशाहत है (और) मुल्क में तुम्हारा ही बोल वाला है लेकिन (कल) अगर खुदा का अज़ाब हम पर आ जाए तो हमारी कौन मदद करेगा फिरऔन ने कहा मैं तो वही बात समझाता हूँ जो मैं खुद समझता हूँ और वही राह दिखाता हूँ जिसमें भलाई है

وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَقُومُ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ مِثْلَ يَوْمِ الْأَحْزَابِ

तो जो शख्स (दर पर्दा) ईमान ला चुका था कहने लगा, भाईयों मुझे तो तुम्हारी निस्बत भी और उम्मतों की तरह रोज़ (बद) का अन्देशा है

مِثْلَ دَابِ قَوْمِ نُوحٍ ۚ وَعَادٍ ۚ وَثَمُودَ وَالَّذِينَ مِنْ ۚ بَعْدِهِمْ ۚ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا ۚ
لِلْعِبَادِ

(कहीं तुम्हारा भी वही हाल न हो) जैसा कि नूह की क्रौम और आद समूद और उनके बाद वाले लोगों का हाल हुआ और खुदा तो बन्दों पर ज़ुल्म करना चाहता ही नहीं

وَيَقُومُ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ

और ऐ हमारी क्रौम मुझे तो तुम्हारी निस्बत कयामत के दिन का अन्देशा है

يَوْمَ تُولُونِ مُدْبِرِينَ مَا لَكُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ ۚ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ ۚ مِنْ
هَادٍ ۚ

जिस दिन तुम पीठ फेर कर (जहन्नुम) की तरफ चल खड़े होगे तो खुदा के (अज़ाब) से तुम्हारा बचाने वाला न होगा, और जिसको खुदा गुमराही में छोड़ दे तो उसका कोई रूबराह करने वाला नहीं

وَلَقَدْ جَاءَكُمْ يُوسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا زِلْتُمْ فِي شَكٍّ مِمَّا جَاءَكُمْ بِهِ ۖ هِيَ حَتَّىٰ
 إِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَن يَبْعَثَ اللَّهُ مِنْ بَعْدِهِ ۖ رَسُولًا ۖ كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَنْ هُوَ
 مُسْرِفٌ مُرْتَابٌ

और (इससे) पहले यूसुफ भी तुम्हारे पास मौजिजे लेकर आए थे तो जो जो लाए थे तुम लोग उसमें बराबर शक ही करते रहे
 यहाँ तक कि जब उन्होंने वफात पायी तो तुम कहने लगे कि अब उनके बाद खुदा हरगिज़ कोई रसूल नहीं भेजेगा जो हद से
 गुज़रने वाला और शक करने वाला है खुदा उसे यू ही गुमराही में छोड़ देता है

الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَانٍ أَتَتْهُمْ ۖ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ وَعِنْدَ الَّذِينَ
 ءَامَنُوا ۖ كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ قَلْبٍ مُتَكَبِّرٍ ۖ جَبَّارٌ ۖ

जो लोग बगैर इसके कि उनके पास कोई दलील आई हो खुदा की आयतों में (स्वाह मा स्वाह) झगड़े किया करते हैं वह खुदा
 के नज़दीक और ईमानदारों के नज़दीक सख्त नफरत खेज़ हैं, यूँ खुदा हर मुतकब्बिर सरकार के दिल पर अलामत मुकर्रर कर
 देता है

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَهْمُنُ ابْنُ لِي صِرَاحًا ۖ لَعَلِّي أَبْلُغُ الْأَسْبَابَ

और फिरऔन ने कहा ऐ हामान हमारे लिए एक महल बनवा दे ताकि (उस पर चढ़ कर) रसतों पर पहुँच जाऊँ

أَسْبَابَ السَّمَوَاتِ فَأَطَّلَعَ إِلَىٰ إِلَهِ مُوسَىٰ وَإِنِّي لِأَظُنُّهُ ۖ كَذِبًا ۖ كَذَلِكَ زَيْنَ
 لِفِرْعَوْنَ سُوءِ عَمَلِهِ ۖ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيلِ ۖ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ إِلَّا فِي تَبَابٍ ۖ

(यानि) आसमानों के रसतों पर फिर मूसा के खुदा को झाँक कर (देख) लूँ और मैं तो उसे यक़ीनी झूठा समझता हूँ, और इसी
 तरह फिरऔन की बदकिरदारयाँ उसको भली करके दिखा दी गयीं थीं और वह राहे रास्ता से रोक दिया गया था, और फिरऔन
 की तद्वीर तो बस बिल्कुल ग़ारत गुल ही थीं

وَقَالَ الَّذِي ءَامَنَ يَقَوْمِ اتَّبِعُونِ أَهْدِيكُمْ سَبِيلَ الرَّشَادِ

और जो शख्स (दर पर्दा) ईमानदार था कहने लगा भाईयों मेरा कहना मानों मैं तुम्हें हिदायत के रास्ते दिख दूँगा

يَقُومُ إِنَّمَا هَذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا مَتَّعٌ ۚ وَإِنَّ الْآخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ

भाईयों ये दुनियावी ज़िन्दगी तो बस (चन्द रोज़ा) फ़ायदा है और आखिरत ही हमेशा रहने का घर है

مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً ۖ فَلَا يُجْزَىٰ إِلَّا مِثْلَهَا ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا ۖ مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أَنثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ ۖ فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُونَ فِيهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ۚ

जो बुरा काम करेगा तो उसे बदला भी वैसा ही मिलेगा, और जो नेक काम करेगा मर्द हो या औरत मगर ईमानदार हो तो ऐसे लोग बेहिश्त में दाखिल होंगे वहाँ उन्हें बेहिसाब रोज़ी मिलेगी

ۚ وَيَقُومُ مَا لِي أَدْعُوكُمْ إِلَى النَّجْوَةِ وَتَدْعُونَنِي إِلَى النَّارِ

और ऐ मेरी क़ौम मुझे क्या हुआ है कि मैं तुमको नज़ाद की तरफ बुलाता हूँ और तुम मुझे दोज़ख की तरफ बुलाते हो

تَدْعُونَنِي لِأَكْفُرَ بِاللَّهِ وَأُشْرِكَ بِهِ ۚ مَا لِيَ لِي بِهِ ۚ عِلْمٌ ۚ وَأَنَا ۚ أَدْعُوكُمْ إِلَى الْعَزِيزِ الْغَفْرِ

तुम मुझे बुलाते हो कि मैं खुदा के साथ कुफ़्र करूँ और उस चीज़ को उसका शरीक बनाऊँ जिसका मुझे इल्म में भी नहीं, और मैं तुम्हें ग़ालिब (और) बड़े बख़्शने वाले खुदा की तरफ बुलाता हूँ

لَا جَرَمَ أَنَّمَا تَدْعُونَنِي إِلَيْهِ لَيْسَ لَهُ ۚ دَعْوَةٌ ۚ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْآخِرَةِ وَأَنْ مَّرَدَّنَا إِلَى اللَّهِ وَأَنَّ الْمُسْرِفِينَ هُمْ أَصْحَابُ النَّارِ

बेशक तुम जिस चीज़ की तरफ मुझे बुलाते हो वह न तो दुनिया ही में पुकारे जाने के क़ाबिल है और न आखिरत में और आखिर में हम सबको खुदा ही की तरफ लौट कर जाना है और इसमें तो शक ही नहीं कि हद से बढ़ जाने वाले जहन्नुमी हैं

فَسَتَذْكُرُونَ مَا أَقُولُ لَكُمْ ۚ وَأَفْوَضُ أَمْرِي إِلَى اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ بَصِيرٌ ۚ بِالْعِبَادِ

तो जो मैं तुमसे कहता हूँ अनक़रीब ही उसे याद करोगे और मैं तो अपना काम खुदा ही को सौंपे देता हूँ कुछ शक नहीं की खुदा बन्दों (के हाल) को खूब देख रहा है

فَوَقَّاهُ اللَّهُ سَيِّئَاتِ مَا مَكُرُوا ۚ ۚ وَحَاقَ بِآلِ فِرْعَوْنَ سُوءُ الْعَذَابِ

तो खुदा ने उसे उनकी तद्दीरों की बुराई से महफूज़ रखा और फिरऔनियों को बड़े अज़ाब ने (हर तरफ) से घेर लिया

النَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا ۖ وَعَشِيًّا ۖ ۚ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ أَدْخِلُوا آلَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ

और अब तो कब्र में दोज़ख की आग है कि वह लोग (हर) सुबह व शाम उसके सामने ला खड़े किए जाते हैं और जिस दिन क़यामत बरपा होगी (हुक़्म होगा) फिरऔन के लोगों को सख़्त से सख़्त अज़ाब में झोंक दो

وَإِذْ يَتَحَاوُونَ فِي النَّارِ فَيَقُولُ الضُّعَفَاءُ ۚ لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا ۖ إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا ۖ ۚ فَهَلْ أَنْتُمْ مُغْنُونَ عَنَّا نَصِيبًا ۖ ۚ مِّنَ النَّارِ

और ये लोग जिस वक़्त ज़हन्नुम में बाहम झगड़ेंगे तो कम हैसियत लोग बड़े आदमियों से कहेंगे कि हम तुम्हारे ताबे थे तो क्या तुम इस वक़्त (दोज़ख की) आग का कुछ हिस्सा हमसे हटा सकते हो

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا ۖ إِنَّا كُلٌّ ۚ فِيهَا ۚ إِنَّ اللَّهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ

तो बड़े लोग कहेंगे (अब तो) हम (तुम) सबके सब आग में पड़े हैं खुदा (को) तो बन्दों के बारे में (जो कुछ) फैसला (करना था) कर चुका

وَقَالَ الَّذِينَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا ۖ ۚ مِّنَ الْعَذَابِ

और जो लोग आग में (जल रहे) होंगे ज़हन्नुम के दरोगाओं से दरख्वास्त करेंगे कि अपने परवरदिगार से अर्ज़ करो कि एक दिन तो हमारे अज़ाब में तख़फ़ीफ़ कर दें

قَالُوا ۖ أَوَلَمْ تَكُ تَأْتِيكُمُ رُسُلُكُم بِالْبَيِّنَاتِ ۖ ۚ قَالُوا ۖ بَلَىٰ ۖ ۚ قَالُوا ۖ فَادْعُوا ۖ ۚ وَمَا دُعَاؤُا ۖ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلٰلٍ

वह जवाब देंगे कि क्या तुम्हारे पास तुम्हारे पैग़म्बर साफ व रौशन मौजिज़े लेकर नहीं आए थे वह कहेंगे (हाँ) आए तो थे, तब फरिश्ते तो कहेंगे फिर तुम खुद (क्यों) न दुआ करो, हालाँकि काफ़िरों की दुआ तो बस बेकार ही है

51

إِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهُدُ

हम अपने पैगम्बरों की और ईमान वालों की दुनिया की ज़िन्दगी में भी ज़रूर मदद करेंगे और जिस दिन गवाह (पैगम्बर फरिश्ते गवाही को) उठ खड़े होंगे

52

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظَّالِمِينَ مَعَذِرَتُهُمْ ۚ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ

(उस दिन भी) जिस दिन ज़ालिमों को उनकी माज़ेरत कुछ भी फायदे न देगी और उन पर फिटकार (बरसती) होगी और उनके लिए बहुत बुरा घर (जहन्नुम) है

53

وَلَقَدْ ءَاتَيْنَا مُوسَى الْهُدَىٰ وَأَوْرَثْنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ الْكِتَابَ

और हम ही ने मूसा को हिदायत (की किताब तौरित) दी और बनी इसराईल को (उस) किताब का वारिस बनाया

54

هُدًى ۚ وَذَكَرَٰى لِأُولَئِكَ ۚ لِيَأْلَبِ

जो अक्लमन्दों के लिए (सरतापा) हिदायत व नसीहत है

55

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۚ وَأَسْتَغْفِرْ لِذَنبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَرِ

(ऐ रसूल) तुम (उनकी शरारत) पर सब्र करो बेशक खुदा का वायदा सच्चा है, और अपने (उम्मत की) गुनाहों की माफी माँगो और सुबह व शाम अपने परवरदिगार की हम्द व सना के साथ तसबीह करते रहो

56

إِنَّ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي ءَايَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَانٍ أَتَتْهُمْ ۚ إِنَّ فِي صُدُورِهِمْ إِلَّا كِبْرٌ ۚ مَا هُمْ بِبَلِغِيهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۚ إِنَّهُ ۚ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ

जिन लोगों के पास (खुदा की तरफ से) कोई दलील तो आयी नहीं और (फिर) वह खुदा की आयतों में (स्वाह मा स्वाह) झगड़े निकालते हैं, उनके दिल में बुराई (की बेजां हवस) के सिवा कुछ नहीं हालाँकि वह लोग उस तक कभी पहुँचने वाले नहीं तो तुम बस खुदा की पनाह माँगते रहो बेशक वह बड़ा सुनने वाला (और) देखने वाला है

لَخَلْقُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ أَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ

सारे आसमान और ज़मीन का पैदा करना लोगों के पैदा करने की ये निस्वत यक़ीनी बड़ा (काम) है मगर अक्सर लोग (इतना भी) नहीं जानते

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَلَا الْمُسِيءُ ۚ قَلِيلًا مَّا تَتَذَكَّرُونَ

और अंधा और आँख वाला (दोनों) बराबर नहीं हो सकते और न मोमिनीन जिन्होंने अच्छे काम किए और न बदकार (ही) बराबर हो सकते हैं बात ये है कि तुम लोग बहुत कम ग़ौर करते हो, कयामत तो ज़रूर आने वाली है

إِنَّ السَّاعَةَ لَءَاتِيَةٌ ۖ لَا رَيْبَ فِيهَا وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ

इसमें किसी तरह का शक नहीं मगर अक्सर लोग (इस पर भी) ईमान नहीं रखते

وَقَالَ رَبُّكُمْ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ ۖ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ

और तुम्हारा परवरदिगार इरशाद फ़रमाता है कि तुम मुझसे दुआएं माँगों मैं तुम्हारी (दुआ) कुबूल करूँगा जो लोग हमारी इबादत से अकड़ते हैं वह अनक़रीब ही ज़लील व ख़्वार हो कर यक़ीनन जहन्नुम वासिल होंगे

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ

खुदा ही तो है जिसने तुम्हारे वास्ते रात बनाई ताकि तुम उसमें आराम करो और दिन को रौशन (बनाया) ताकि काम करो बेशक खुदा लोगों परा बड़ा फ़ज़ल व करम वाला है, मगर अक्सर लोग उसका शुक्र नहीं अदा करते

ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ خَلِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۖ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ فَأَنَّى تُؤْفَكُونَ

यही खुदा तुम्हारा परवरदिगार है जो हर चीज़ का ख़ालिक है, और उसके सिवा कोई माबूद नहीं, फिर तुम कहाँ बहके जा रहे हो

كَذَلِكَ يُؤْفِكُ الَّذِينَ كَانُوا؟ بِأَيْتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ

जो लोग खुदा की आयतों से इन्कार रखते थे वह इसी तरह भटक रहे थे

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ قَرَارًا؟ وَالسَّمَاءَ بِنَاءً؟ وَصَوَّرَكُمُ فَأَحْسَنَ صُورَكُمْ
وَرَزَقَكُم مِّنَ الطَّيِّبَاتِ؟ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ؟ فَتَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ

अल्लाह ही तो है जिसने तुम्हारे वास्ते ज़मीन को ठहरने की जगह और आसमान को छत बनाया और उसी ने तुम्हारी सूरतें बनायीं तो अच्छी सूरतें बनायीं और उसी ने तुम्हें साफ सुथरी चीज़ें खाने को दीं यही अल्लाह तो तुम्हारा परवरदिगार है तो खुदा बहुत ही मुतबर्क है जो सारे जहाँ का पालने वाला है

هُوَ الْحَيُّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ؟ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

वही (हमेशा) ज़िन्दा है और उसके सिवा कोई माबूद नहीं तो निरी खरी उसी की इबादत करके उसी से ये दुआ माँगो, सब तारीफ खुदा ही को सज़ावार है और जो सारे जहाँ का पालने वाला है

؟ قُلْ إِنِّي نُهَيْتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَمَّا جَاءَنِيَ الْبَيِّنَاتُ مِنْ رَبِّي
وَأُمِرْتُ أَنْ أُسْلِمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि जब मेरे पास मेरे परवरदिगार की बारगाह से खुले हुए मौजिज़े आ चुके तो मुझे इस बात की मनाही कर दी गयी है कि खुदा को छोड़ कर जिनको तुम पूजते हो मैं उनकी परसतिश करूँ और मुझे तो यह हुक्म हो चुका है कि मैं सारे जहाँ के पालने वाले का फरमाबरदार बनू

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ؟ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ؟ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ؟ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا؟ ثُمَّ
لِتَبْلُغُوا؟ أَشَدَّكُمْ ثُمَّ لَتَكُونُوا؟ شُيُوخًا؟ وَمِنْكُمْ مَّنْ يَتَوَفَّى مِنْ قَبْلُ؟ وَلِتَبْلُغُوا؟
أَجَلًا؟ أَوْ مُسَمًّا؟ وَلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ

वही वह खुदा है जिसने तुमको पहले (पहल) मिटटी से पैदा किया फिर नुत्फे से, फिर जमे हुए खून फिर तुमको बच्चा बनाकर (माँ के पेट) से निकलता है (ताकि बढ़ों) फिर (ज़िन्दा रखता है) ताकि तुम अपनी जवानी को पहुँचो फिर (और ज़िन्दा रखता है ताकि तुम बूढ़े हो जाओ और तुममें से कोई ऐसा भी है जो (इससे) पहले मर जाता है गरज़ (तुमको उस वक्त तक ज़िन्दा रखता है) की तुम (मौत के) मुकरर वक्त तक पहुँच जाओ

هُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ فَإِذَا قَضَىٰ أَمْرًا ۖ فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ ۖ كُن فَيَكُونُ

और ताकि तुम (उसकी कुदरत को समझो) वह वही (खुदा) है जो जिलाता और मारता है, फिर जब वह किसी काम का करना ठान लेता है तो बस उससे कह देता है कि 'हो जा' तो वह फ़ौरन हो जाता है

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ أَنَّىٰ يُصْرَفُونَ

(ऐ रसूल) क्या तुमने उन लोगों (की हालत) पर गौर नहीं किया जो खुदा की आयतों में झगड़े निकाला करते हैं

الَّذِينَ كَذَّبُوا ۖ بِالْكِتَابِ وَمِمَّا أَرْسَلْنَا بِهِ ۖ رُسُلَنَا ۖ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ

ये कहाँ भटके चले जा रहे हैं, जिन लोगों ने किताबे (खुदा) और उन बातों को जो हमने पैगम्बरों को देकर भेजा था झुठलाया तो बहुत जल्द उसका नतीजा उन्हें मालूम हो जाएगा

إِذِ الْأَغْلُلُ فِي أَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلْسِلُ يُسْحَبُونَ

जब (भारी भारी) तौक़ और जंजीरें उनकी गर्दनो में होंगी (और पहले) खौलते हुए पानी में घसीटे जाएँगे

فِي الْحَمِيمِ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ

फिर (जहन्नुम की) आग में झोंक दिए जाएँगे

ثُمَّ قِيلَ لَهُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُونَ

फिर उनसे पूछा जाएगा कि खुदा के सिवा जिनको (उसका) शरीक बनाते थे

مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ قَالُوا ۖ ضَلُّوا ۖ عَنَّا بَلْ لَمْ نَكُن نَدْعُوا ۖ مِنْ قَبْلُ شَيْئًا ۖ كَذٰلِكَ يُخِيلُ اللَّهُ الْكٰفِرِينَ

(इस वक्त) कहाँ हैं वह कहेंगे अब तो वह हमसे जाते रहे बल्कि (सच यूँ है कि) हम तो पहले ही से (खुदा के सिवा) किसी चीज़ की परसतिश न करते थे यूँ खुदा काफ़िरों को बौखला देगा

ذَلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَفْرَحُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُونَ

(कि कुछ समझ में न आएगा) ये उसकी सज़ा है कि तुम दुनिया में नाहक (बात पर) निहाल थे और इसकी सज़ा है कि तुम इतराया करते थे

أَدْخُلُوا ۚ أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ

अब जहन्नुम के दरवाज़े में दाखिल हो जाओ (और) हमेशा उसी में (पड़े) रहो, गरज़ तकबुर करने वालों का भी (क्या) बुरा ठिकाना है

فَأَصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۚ ۚ فَإِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ

तो (ऐ रसूल) तुम सब्र करो खुदा का वायदा यकीनी सच्चा है तो जिस (अज़ाब) की हम उन्हें धमकी देते हैं अगर हम तुमको उसमें कुछ दिखा दें या तुम ही को (इसके क़बूल) दुनिया से उठा लें तो (आखिर फिर) उनको हमारी तरफ लौट कर आना है,

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا ۚ ۚ مِّن قَبْلِكَ مِنْهُمْ مِّن قَصَصِنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَّن لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ۚ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ ۚ فَإِذَا جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُونَ

और तुमसे पहले भी हमने बहुत से पैग़म्बर भेजे उनमें से कुछ तो ऐसे हैं जिनके हालात हमने तुमसे बयान कर दिए, और कुछ ऐसे हैं जिनके हालात तुमसे नहीं दोहराए और किसी पैग़म्बर की ये मजाल न थी कि खुदा के ऐख्तेयार दिए बग़ैर कोई मौजिज़ा दिखा सकें फिर जब खुदा का हुक्म (अज़ाब) आ पहुँचा तो ठीक ठीक फैसला कर दिया गया और अहले बातिल ही इस घाटे में रहे,

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَنْعَامَ لِتَرْكَبُوا ۚ ۚ مِنْهَا وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ

खुदा ही तो वह है जिसने तुम्हारे लिए चारपाए पैदा किए ताकि तुम उनमें से किसी पर सवार होते हो और किसी को खाते हो

وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوا عَلَيْهَا حَاجَةً ۚ فِي صُدُورِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ

और तुम्हारे लिए उनमें (और भी) फायदे हैं और ताकि तुम उन पर (चढ़ कर) अपनी दिली मक़सद तक पहुँचो और उन पर और (नीज़) कश्तियों पर सवार फिरते हो

وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ ۚ فَآيَ آيَاتِ اللَّهِ تُنْكِرُونَ

और वह तुमको अपनी (कुदरत की) निशानियाँ दिखाता है तो तुम खुदा की किन किन निशानियों को न मानोगे

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا ۚ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا أَكْثَرَ مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً ۚ وَءِثَارًا ۚ فِي الْأَرْضِ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ

तो क्या ये लोग रूए ज़मीन पर चले फिरे नहीं, तो देखते कि जो लोग इनसे पहले थे उनका क्या अंजाम हुआ, जो उनसे (तादाद में) कहीं ज्यादा थे और कूवत और ज़मीन पर (अपनी) निशानियाँ (यादगारें) छोड़ने में भी कहीं बढ़ बढ़ कर थे तो जो कुछ उन लोगों ने किया कराया था उनके कुछ भी काम न आया

فَلَمَّا جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَرَحُوا ۚ بِمَا عِنْدَهُم مِّنَ الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ ۚ يَسْتَهْزِءُونَ

फिर जब उनके पैग़म्बर उनके पास वाज़ेए व रौशन मौज़िज़े ले कर आए तो जो इल्म (अपने ख्याल में) उनके पास था उस पर नाज़िल हुए और जिस (अज़ाब) की ये लोग हँसी उड़ाते थे उसी ने उनको चारों तरफ से घेर लिया

فَلَمَّا رَأَوْا ۚ بَأْسَنَا قَالُوا ۚ ءَامَنَّا بِاللَّهِ وَحَدُّهُ ۚ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهِ ۚ مُشْرِكِينَ

तो जब इन लोगों ने हमारे अज़ाब को देख लिया तो कहने लगे, हम यकता खुदा पर ईमान लाए और जिस चीज़ को हम उसका शरीक बनाते थे हम उनको नहीं मानते

فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ إِيمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا ۚ بِأَسْنَا ۚ سُنَّتَ اللَّهُ الَّتِي قَدْ خَلَتْ فِي عِبَادِهِ ۚ ۚ
وَحَسِرَ هُنَالِكَ الْكَافِرُونَ

तो जब उन लोगों ने हमारा (अज़ाब) आते देख लिया तो अब उनका ईमान लाना कुछ भी फायदेमन्द नहीं हो सकता (ये) खुदा की आदत (है) जो अपने बन्दों के बारे में (सदा से) चली आती है और काफ़िर लोग इस वक्त घाटे मे रहे

Fussilat

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ حَم

हा मीम

2

تَنْزِيلٌ ۚ مِّنَ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

(ये किताब) रहमान व रहीम खुदा की तरफ से नाज़िल हुई है ये (वह) किताब अरबी कुरान है

3

كِتَابٌ ۚ فَصَّلَتْ ءَايَاتُهُ ۚ قُرْءَانًا عَرَبِيًّا ۚ لِّقَوْمٍ ۚ يَعْلَمُونَ

जिसकी आयतें समझदार लोगों के वास्ते तफ़सील से बयान कर दी गयीं हैं

4

بَشِيرًا ۚ وَنَذِيرًا ۚ فَأَعْرَضَ أَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ

(नेको कारों को) खुशखबरी देने वाली और (बदकारों को) डराने वाली है इस पर भी उनमें से अक्सर ने मुँह फेर लिया और वह सुनते ही नहीं

5

وَقَالُوا ۚ قُلُوبُنَا فِيْ أَكِنَّةٍ ۚ مِّمَّا تَدْعُونَا إِلَيْهِ وَفِيْ ءَاذَانِنَا وَقْرٌ ۚ وَمِنْ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ
حِجَابٌ ۚ فَأَعْمَلْ إِنَّا عَمِلُونَ

और कहने लगे जिस चीज़ की तरफ तुम हमें बुलाते हो उससे तो हमारे दिल पर्दों में हैं (कि दिल को नहीं लगती) और हमारे कानों में गिर्दानी (बहरापन है) कि कुछ सुनायी नहीं देता और हमारे तुम्हारे दरमियान एक पर्दा (हायल) है तो तुम (अपना) काम करो हम (अपना) काम करते हैं

6

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ ۖ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَىٰ أَنَّمَا إِلَهُكُمُ اللَّهُ ۖ وَحِدٌ ۖ فَاسْتَقِيمُوا ۖ إِلَيْهِ
وَأَسْتَغْفِرُوهُ ۖ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِينَ

(ऐ रसूल) कह दो कि मैं भी बस तुम्हारा ही सा आदमी हूँ (मगर फ़र्क ये है कि) मुझ पर 'वही' आती है कि तुम्हारा माबूद बस (वही) यकता खुदा है तो सीधे उसकी तरफ मुतावज्जे रहो और उसी से बख़्शिश की दुआ माँगो, और मुश्रिकों पर अफसोस है

7

الَّذِينَ لَا يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَفِرُونَ

जो ज़कात नहीं देते और आखेरत के भी कायल नहीं

8

إِنَّ الَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۖ

बेशक जो लोग ईमान लाए और अच्छे अच्छे काम करते रहे और उनके लिए वह सवाब है जो कभी ख़त्म होने वाला नहीं

9

ۖ قُلْ أَنتُمْ لَتَكْفُرُونَ بِالَّذِي خَلَقَ الْأَرْضَ فِي يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُونَ لَهُ ۖ أَنْدَادًا ۖ ا ۖ
ذَٰلِكَ رَبُّ الْعَالَمِينَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि क्या तुम उस (खुदा) से इन्कार करते हो जिसने ज़मीन को दो दिन में पैदा किया और तुम (औरों को) उसका हमसर बनाते हो, यही तो सारे जहाँ का सरपरस्त है

10

وَجَعَلَ فِيهَا رَوْسِيَٰ مِنْ فَوْقِهَا وَبَرَكَ فِيهَا وَقَدَّرَ فِيهَا أَقْوَتَهَا فِي ۖ أَرْبَعَةِ أَيَّامٍ ۖ سَوَاءً ۖ
لِّلسَّائِلِينَ

और उसी ने ज़मीन में उसके ऊपर से पहाड़ पैदा किए और उसी ने इसमें बरकत अता की और उसी ने एक मुनासिब अन्दाज़ पर इसमें सामाने माईशत का बन्दोबस्त किया (ये सब कुछ) चार दिन में और तमाम तलबगारों के लिए बराबर है

11

ثُمَّ أَسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ وَهِيَ دُخَانٌ ۖ فَقَالَ لَهَا وَلِلْأَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا ۖ ا
قَالَتَا أَتَيْنَا طَائِعِينَ

फिर आसमान की तरफ मुतावज्जे हुआ और (उस वक्त) धुएँ (का सा) था उसने उससे और ज़मीन से फरमाया कि तुम दोनों आओ खुशी से ख्वाह कराहत से, दोनों ने अर्ज़ की हम खुशी खुशी हाज़िर हैं

12

فَقَضَيْنَهُنَّ سَبْعَ سَمَوَاتٍ ۚ فِي يَوْمَيْنِ وَأَوْحَىٰ فِي كُلِّ سَمَاءٍ أَمْرَهَا ۚ وَزَيَّنَّا السَّمَاءَ
الدُّنْيَا بِمَصْبِيحٍ وَحِفْظٍ ۗ ا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ

(और हुक्म के पाबन्द हैं) फिर उसने दोनों में उस (धुएँ) के सात आसमान बनाए और हर आसमान में उसके (इन्तेज़ाम) का हुक्म (कार कुनान कज़ा व क़दर के पास) भेज दिया और हमने नीचे वाले आसमान को (सितारों के) चिरागों से मज़य्यन किया और (शैतानों से महफूज़) रखा ये वाकिफ़कार ग़ालिब खुदा के (मुकर्रर किए हुए) अन्दाज़ हैं

13

فَإِنْ أَعْرَضُوا ۚ فَقُلْ أَنْذَرْتُكُمْ صُعِقَةً ۚ مِثْلَ صُعِقَةِ عَادٍ ۚ وَثُمُودَ

फिर अगर हम पर भी ये कुफ़्फार मुँह फेरें तो कह दो कि मैं तुम को ऐसी बिजली गिरने (के अज़ाब से) डराता हूँ जैसी क्रौम आद व समूद की बिजली की कड़क

14

إِذْ جَاءَتْهُمْ الرُّسُلُ مِنْ ۚ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا تَعْبُدُوا ۚ إِلَّا اللَّهَ ۚ قَالُوا ۚ لَوْ
شَاءَ رَبُّنَا لَأَنْزَلَ مَلَائِكَةً ۚ فَإِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ ۚ كَافِرُونَ

जब उनके पास उनके आगे से और पीछे से पैग़म्बर (ये ख़बर लेकर) आए कि खुदा के सिवा किसी की इबादत न करो तो कहने लगे कि अगर हमारा परवरदिगार चाहता तो फ़रिश्ते नाज़िल करता और जो (बातें) देकर तुम लोग भेजे गए हो हम तो उसे नहीं मानते

15

فَأَمَّا عَادٌ ۚ فَاسْتَكْبَرُوا ۚ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوا ۚ مَنْ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ۚ أُولَٰئِكَ
يَرَوْنَ ۚ أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَهُمْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۚ ۚ وَكَانُوا ۚ بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ

तो आद नाहक़ रूए ज़मीन में गुरुर करने लगे और कहने लगे कि हम से बढ के कूवत में कौन है, क्या उन लोगों ने इतना भी ग़ौर न किया कि खुदा जिसने उनको पैदा किया है वह उनसे कूवत में कहीं बढ के है, गरज़ वह लोग हमारी आयतों से इन्कार ही करते रहे

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا ۖ صَرْصَرًا ۖ فِي أَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ ۚ لِّنُذِيقَهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَخْزَىٰ ۚ وَهُمْ لَا يُنصَرُونَ

तो हमने भी (तो उनके) नहूसत के दिनों में उन पर बड़ी ज़ोरों की आँधी चलाई ताकि दुनिया की ज़िन्दगी में भी उनको रूसवाई के अज़ाब का मज़ा चखा दें और आखेरत का अज़ाब तो और ज्यादा रूसवा करने वाला ही होगा और (फिर) उनको कहीं से मदद भी न मिलेगी

وَأَمَّا ثَمُودُ فَهَدَيْنَاهُمْ فَاسْتَحَبُّوا ۚ آلْعَمَىٰ عَلَى الْهُدَىٰ فَأَخَذَتْهُمُ صَيعَةٌ الْعَذَابِ الْهُونِ
بِمَا كَانُوا ۚ يَكْسِبُونَ

और रहे समूद तो हमने उनको सीधा रास्ता दिखाया, मगर उन लोगों ने हिदायत के मुकाबले में गुमराही को पसन्द किया तो उन की करतूतों की बदौलत ज़िल्लत के अज़ाब की बिजली ने उनको ले डाला

وَنَجَّيْنَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَكَانُوا يَتَّقُونَ

और जो लोग ईमान लाए और परहेज़गारी करते थे उनको हमने (इस) मुसीबत से बचा लिया

وَيَوْمَ يُحْشَرُ أَعْدَاءُ اللَّهِ إِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوزَعُونَ

और जिस दिन खुदा के दुश्मन दोज़ख की तरफ हकाए जाएँगे तो ये लोग तरतीब वार खड़े किए जाएँगे

حَتَّىٰ إِذَا مَا جَاءُوهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَأَبْصَرُهُمْ وَجُلُودُهُمْ بِمَا كَانُوا ۚ يَعْمَلُونَ

यहाँ तक की जब सब के सब जहन्नुम के पास जाएँगे तो उनके कान और उनकी आँखें और उनके (गोشت पोस्त) उनके खिलाफ उनके मुकाबले में उनकी कारस्तानियों की गवाही देंगे

وَقَالُوا ۚ لَجُلُودِهِمْ لَمْ شَهِدْتُمْ عَلَيْنَا ۚ قَالُوا ۚ أَنْطَقَنَا اللَّهُ الَّذِي أَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ خَلَقَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ

और ये लोग अपने आज़ा से कहेंगे कि तुमने हमारे खिलाफ क्यों गवाही दी तो वह जवाब देंगे कि जिस खुदा ने हर चीज़ को गोया किया उसने हमको भी (अपनी कुदरत से) गोया किया और उसी ने तुमको पहली बार पैदा किया था और (आखिर) उसी की तरफ लौट कर जाओगे

وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُونَ أَنْ يَشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَا أَبْصَرُكُمْ وَلَا جُلُودُكُمْ وَلَكِنْ ظَنَنْتُمْ أَنَّ اللَّهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيرًا مِمَّا تَعْمَلُونَ

और (तुम्हारी तो ये हालत थी कि) तुम लोग इस ख्याल से (अपने गुनाहों की) पर्दा दारी भी तो नहीं करते थे कि तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें और तुम्हारे आज्ञा तुम्हारे बरखिलाफ गवाही देंगे बल्कि तुम इस ख्याल में (भूले हुए) थे कि खुदा को तुम्हारे बहुत से कामों की खबर ही नहीं

وَذَلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِي ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ أَرْدَاكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ مِنَ الْخُسِرِينَ

और तुम्हारी इस बदख्याली ने जो तुम अपने परवरदिगार के बारे में रखते थे तुम्हें तबाह कर छोड़ा आखिर तुम घाटे में रहे

فَإِنْ يَصْبِرُوا ۖ فَالِنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۚ وَإِنْ يَسْتَعْتِبُوا ۖ فَمَا هُمْ مِنَ الْمُعْتَبِينَ

फिर अगर ये लोग सब्र भी करें तो भी इनका ठिकाना दोज़ख ही है और अगर तौबा करें तो भी इनकी तौबा कुबूल न की जाएगी

ۚ وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاءَ فَزَيَّنُوا ۚ لَهُمْ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنَّ وَالْإِنْسِ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا خُسِرِينَ

और हमने (गोया खुद शैतान को) उनका हमनशीन मुकर्रर कर दिया था तो उन्होंने उनके अगले पिछले तमाम उमूर उनकी नज़रों में भले कर दिखाए तो जिन्नात और इन्सानो की उम्मतें जो उनसे पहले गुज़र चुकी थीं उनके शुमूल (साथ) में (अज़ाब का) वायदा उनके हक़ में भी पूरा हो कर रहा बेशक ये लोग अपने घाटे के दरपै थे

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ لَا تَسْمَعُوا ۚ لِهَذَا الْقُرْآنِ وَالْغَوَا ۚ فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَعْلَمُونَ

और कुफ़्फ़ार कहने लगे कि इस कुरान को सुनो ही नहीं और जब पढ़ें (तो) इसके (बीच) में गुल मचा दिया करो ताकि (इस तरकीब से) तुम ग़ालिब आ जाओ

فَلَنُذِيقَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ عَذَابًا ۚ شَدِيدًا ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي كَانُوا ۚ يَعْمَلُونَ

तो हम भी काफ़िरों को सख्त अज़ाब के मज़े चखाएँगे और इनकी कारस्तानियों की बहुत बड़ी सज़ा ये दोज़ख है

ذَلِكَ جَزَاءُ أَعْدَاءِ اللَّهِ النَّارُ ۚ لَهُمْ فِيهَا دَارُ الْخُلْدِ ۚ جَزَاءٌ ۚ بِمَا كَانُوا ۚ بِأَيَّتِنَا يَجْحَدُونَ

खुदा के दुश्मनों का बदला है कि वह जो हमरी आयतों से इन्कार करते थे उसकी सज़ा में उनके लिए उसमें हमेशा (रहने) का घर है,

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ رَبَّنَا أَرْنَا الَّذِينَ أَضَلَّلْنَا مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ نَجْعَلُهُمَا تَحْتَ أَقْدَامِنَا لِيَكُونَا مِنَ الْأَسْفَلِينَ

और (क़यामत के दिन) कुफ़्फ़ार कहेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार जिनों और इन्सानों में से जिन लोगों ने हमको गुमराह किया था (एक नज़र) उनको हमें दिखा दे कि हम उनको पाँव तले (रौन्द) डालें ताकि वह खूब ज़लील हों

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا ۚ رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَمُوا ۚ تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا ۚ وَلَا تَحْزَنُوا ۚ وَأَبْشِرُوا ۚ بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ

और जिन लोगों ने (सच्चे दिल से) कहा कि हमारा परवरदिगार तो (बस) खुदा है, फिर वह उसी पर भी क़ायम भी रहे उन पर मौत के वक्त (रहमत के) फ़रिश्ते नाज़िल होंगे (और कहेंगे) कि कुछ ख़ौफ न करो और न ग़म खाओ और जिस बेहिश्त का तुमसे वायदा किया गया था उसकी खुशियां मनाओ

نَحْنُ أَوْلِيَآؤُكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۚ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهَى أَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ

हम दुनिया की ज़िन्दगी में तुम्हारे दोस्त थे और आख़ेरत में भी तुम्हारे (रफ़ीक़) हैं और जिस चीज़ का भी तुम्हारे जी चाहे बेहिश्त में तुम्हारे वास्ते मौजूद है और जो चीज़ तलब करोगे वहाँ तुम्हारे लिए (हाज़िर) होगी

نُزُلًا ۚ مِّنْ غَفُورٍ رَّحِيمٍ ۚ

(ये) बख़्शने वाले मेहरबान (खुदा) की तरफ़ से (तुम्हारी मेहमानी है)

وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا ۖ مِّمَّنْ دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ صَالِحًا ۖ وَقَالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ

और इस से बेहतर किसकी बात हो सकती है जो (लोगों को) खुदा की तरफ बुलाए और अच्छे अछे काम करे और कहे कि मैं भी यकीनन (खुदा के) फरमाबरदार बन्दों में हूँ

وَلَا تَسْتَوِ الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۚ ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ ۖ كَأَنَّهُ ۖ وَلِيٌّ حَمِيمٌ ۚ

और भलाई बुराई (कभी) बराबर नहीं हो सकती तो (सख्त कलामी का) ऐसे तरीके से जवाब दो जो निहायत अच्छा हो (ऐसा करोगे) तो (तुम देखोगे) जिस में और तुममें दुश्मनी थी गोया वह तुम्हारा दिल सोज़ दोस्त है

وَمَا يُلْقِيهَا إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا ۚ وَمَا يُلْقِيهَا إِلَّا ذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ۚ

ये बात बस उन्हीं लोगों को हासिल हुई है जो सब्र करने वाले हैं और उन्हीं लोगों को हासिल होती है जो बड़े नसीबवर हैं

وَأِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْغٌ ۖ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۚ إِنَّهُ ۖ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۚ

और अगर तुम्हें शैतान की तरफ से वसवसा पैदा हो तो खुदा की पनाह माँग लिया करो बेशक वह (सबकी) सुनता जानता है

وَمِنْ ءَايَاتِهِ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۚ لَا تَسْجُدُوا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ
وَأَسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ

और उसकी (कुदरत की) निशानियों में से रात और दिन और सूरज और चाँद हैं तो तुम लोग न सूरज को सज्जदा करो और न चाँद को, और अगर तुम खुदा ही की इबादत करनी मंज़ूर रहे तो बस उसी को सज्जदा करो जिसने इन चीज़ों को पैदा किया है

فَإِنْ أَسْتَكْبَرُوا ۖ فَالَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُونَ لَهُ ۖ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْمُونَ ۚ

पस अगर ये लोग सरकशी करें तो (खुदा को भी उनकी परवाह नहीं) वो लोग (फ़रिश्ते) तुम्हारे परवरदिगार की बारगाह में हैं वह रात दिन उसकी तसबीह करते रहते हैं और वह लोग उकताते भी नहीं

وَمِنْ ءَايَاتِهِ ۚ إِنَّكَ تَرَى الْأَرْضَ خُشْعَةً ۚ فَإِذَا أَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ۚ إِنَّ الَّذِي أَحْيَاهَا لَمُحْيِ الْمَوْتَى ۚ إِنَّهُ ۚ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

उसकी कुदरत की निशानियों में से एक ये भी है कि तुम ज़मीन को खुश्क और बेआब ओ गयाह देखते हो फिर जब हम उस पर पानी बरसा देते हैं तो लहलहाने लगती है और फूल जाती है जिस खुदा ने (मुर्दा) ज़मीन को ज़िन्दा किया वह यक़ीनन मुर्दों को भी ज़िलाएगा बेशक वह हर चीज़ पर कादिर है

إِنَّ الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي ءَايَاتِنَا لَا يَخْفُونَ عَلَيْنَا ۚ أَفَمَنْ يُلْقَى فِي النَّارِ خَيْرٌ أَمْ مَنْ يَأْتِي ءَامِنًا يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ أَعْمَلُوا ۚ مَا شِئْتُمْ ۚ إِنَّهُ ۚ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ

जो लोग हमारी आयतों में हेर फेर पैदा करते हैं वह हरगिज़ हमसे पोशीदा नहीं हैं भला जो शख्स दोज़ख में डाला जाएगा वह बेहतर है या वह शख्स जो क़यामत के दिन बेखौफ व खतर आएगा (खैर) जो चाहो सो करो (मगर) जो कुछ तुम करते हो वह (खुदा) उसको देख रहा है

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ بِالذِّكْرِ لَمَّا جَاءَهُمْ ۚ وَإِنَّهُ ۚ لَكِتَابٌ عَزِيزٌ

जिन लोगों ने नसीहत को जब वह उनके पास आयी न माना (वह अपना नतीजा देख लेंगे) और ये कुरान तो यक़ीनी एक आली मरतबा किताब है

لَا يَأْتِيهِ الْبُطْلُ مِنْ ۚ بَيْنَ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِ ۚ ۚ تَنْزِيلٌ ۚ مِنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ ۚ

कि झूठ न तो उसके आगे फटक सकता है और न उसके पीछे से और खूबियों वाले दाना (खुदा) की बारगाह से नाज़िल हुई है

مَا يُقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدْ قِيلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ ۚ وَذُو عِقَابٍ ۚ أَلِيمٌ

(ऐ रसूल) तुमसे से भी बस वही बातें कहीं जाती हैं जो तुमसे और रसूलों से कही जा चुकी हैं बेशक तुम्हारा परवरदिगार बख्शने वाला भी है और दर्दनाक अज़ाब वाला भी है

وَلَوْ جَعَلْنَاهُ قُرْءَانًا أَعْجَمِيًّا ۖ لَقَالُوا ۚ لَوْلَا فُصِّلَتْ ءَايَاتُهُ ۖ ؕ ءَا ۚ عَجْمِيٌّ ۚ
وَعَرَبِيٌّ ۚ ۚ قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ هُدًى ۚ وَشِفَاءٌ ۚ ۚ وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ فِى
ءَاذَانِهِمْ وَقْرٌ ۚ وَهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ۚ ۚ أُو۟لَٔئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍ ۚ بَعِيدٍ ۚ

और अगर हम इस कुरान को अरबी ज़बान के सिवा दूसरी ज़बान में नाज़िल करते तो ये लोग ज़रूर कह न बैठते कि इसकी आयतें (हमारी) ज़बान में क्यों तफ़सीलदार बयान नहीं की गयी क्या (खूब कुरान तो) अजमी और (मुखातिब) अरबी (ऐ रसूल) तुम कह दो कि ईमानदारों के लिए तो ये (कुरान अज़सरतापा) हिदायत और (हर मर्ज़ की) शिफ़ा है और जो लोग ईमान नहीं रखते उनके कानों (के हक़) में गिरानी (बहरापन) है और वह (कुरान) उनके हक़ में नाबीनाई (का सबब) है तो गिरानी की वजह से गोया वह लोग बड़ी दूर की जगह से पुकारे जाते हैं

وَلَقَدْ ءَاتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَآخْتَلَفَ فِيهِ ۚ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ ۚ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَفُضِيَ
بَيْنَهُمْ ۚ ۚ وَإِنَّهُمْ لَفِى شَكٍّ ۚ مِنْهُ مُرِيبٍ ۚ

(और नहीं सुनते) और हम ही ने मूसा को भी किताब (तौरैत) अता की थी तो उसमें भी इसमें एख्तेलाफ किया गया और अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से एक बात पहले न हो चुकी होती तो उनमें कब का फैसला कर दिया गया होता, और ये लोग ऐसे शक़ में पड़े हुए हैं जिसने उन्हें बेचैन कर दिया है

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا ۖ فَلِنَفْسِهِ ۚ ॥ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا ۚ ॥ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَمٍ ۚ لِلْعَبِيدِ

जिसने अच्छे अच्छे काम किये तो अपने नफे के लिए और जो बुरा काम करे उसका वबाल भी उसी पर है और तुम्हारा परवरदिगार तो बन्दों पर (कभी) ज़ुल्म करने वाला नहीं